क्रम विषय	पृष्ठ
३४–गोत्रकर्मके बधके विशेष भाव	६६
३५–अंतरायकर्मके बधके विशेष भाव ...	६६
३६–पाप पुण्य भेद	६७
३७–लेश्या ...	६८
३८–आठ कर्मोंके उत्तरभेद	६९
३९–पुण्य पाप प्रकृति	७६
४०–चार प्रकारका बन्ध	७८
४१–आबाधाकालका नियम	८१
४२–चौदह गुणस्थान	८४
४३–गुणस्थानोंमे प्रकृतिबंध	८८
४४–गुणस्थानोंमे अबन्ध, बंध-व्युच्छित्ति	९१
४५–कर्मोंका उदय	१०३
४६–गुणस्थानके उदयस्थान	१०९
४७–कर्मोंकी सत्ता अथवा उनका सत्य	१२१
४८–आठों कर्मोंकी उत्तर प्रकृतियोंकी सत्ता	१२३

अध्याय चौथा।

पुरुपार्थका स्वभाव और कार्य।

क्रम विषय	पृष्ठ
४९–पुरुषार्थ द्वारा सचित कर्ममे परिवर्तन	१३१
५०–जीवोंके पाच प्रकारके भाव व भेद प्रभेद	१३४
५१–पारणामिक भाव	१४१

अध्याय पांचवां।

धर्म पुरुपार्थ।

क्रम विषय	पृष्ठ
५२–धर्म पुरुषार्थकी मुख्यता	१४२
५३–साधुका व्यवहार धर्म	१४२
५४–गृहस्थ धर्म	१४३
५५–बारह व्रत ...	१४९
५६–ग्यारह प्रतिमाएं ..	१५६

अध्याय छठा।

अर्थ पुरुपार्थ।

क्रम विषय	पृष्ठ
५७–अर्थ पुरुषार्थ कैसे करे	१५९
५८–उद्यमके छ: प्रकार	१५९

अध्याय सातवां।

काम पुरुपार्थ।

क्रम विषय	पृष्ठ
५९–पाचो इंद्रियोंके विषयोंका उपयोग किस प्रकार करे	१६३

अध्याय आठवां।

मोक्ष पुरुपार्थ।

क्रम विषय	पृष्ठ
६०–सिद्ध अवस्थाका स्वरूप	१६७

\+ \+ \+

शुद्ध करके पढ़े—

इस पुस्तकमे पृ० लाइन २१ मे Lifeless Bodies or Dead Bodies की जगह पर Living Bodies पढ़े।